Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, P-ISSN: 3049-172X, Volume 2 | Issue 2 | (Apr – Jun 2025)

# कुमाउनी जनजातीय होली का सांस्कृतिक आधार पर कलात्मक विवेचन

**भाग्य श्री ओली**
शोध छात्रा, चित्रकला, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, परिसर अल्मोड़ा

**सारांश**

कुमाऊं में होली का त्यौहार एक लोक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसीलिए इसे होलिकोत्सव भी कहा जाता है। कुमाऊनी समाज में होली का त्यौहार लगभग एक या डेढ़ महीने पहले से शुरू हो जाता है। यहां का हर वर्ग इस उत्सव को बड़े ही उत्साह के साथ इस त्योंहार को मनाता है। वैसे तो कुमाऊं के पहाड़ो में होली लोक उत्सव के रूप में प्रसिद्ध है। लेकिन कुमाऊं के जनजातीय समुदाय में होली का त्यौहार कुछ भिन्न तरीके से मनाया जाता है। कुमाऊनी जनजातियों में कुछ स्थानों की होली विशेष प्रसिद्ध है। यहां जनजातियों में होली के अवसर पर गीत-संगीत के अलावा तंत्र-मंत्र, अनुष्ठानिक कला का समावेश देखने को मिलता है। यहाँ धार्मिक अनुष्ठान से लेकर ढोलक की थाप के साथ होली मनाई जाती है। वहीं होलिकोत्सव के अवसर पर कला एवं संस्कृति का अनूठा संयोजन देखने को मिलता है। ब्रज, बरसाना और मथुरा की होली ने जहां कृष्ण एवं राधा के अलौकिक प्रेम की गाथाओं को हजारों वर्षों तक जीवित कर दिया। वहीं ब्रज की गलियों से गूंजते हुए इस राधा कृष्ण के प्रेम ने पहाड़ों के प्राकृतिक सौंदर्य को एक नया स्वरूप दिया। वैसे तो उत्तराखंड के हर कोने में होली का उत्सव मनाया जाता है, परंतु कुमाऊं की जनजातीय होली ने यहां के स्थानीय लोक संस्कृति को धीरे-धीरे जीवन के अभिन्न अंग के रूप में समाहित करने में विशिष्ट योगदान है।

**बीज शब्द -** कुमाउनी, त्योहार, होली, कला, जनजाति, पारम्परिक

**शोध विस्तार-**

कला मनुष्य को नवजीवन प्रदान करती है। यह मानव को समाज में अपने मनोभावों को व्यक्त करने का सबसे सरल माध्यम रही है। कलाओं ने हमारे समाज को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मानव जन-समाज से विकसित कला को लोककला का नाम दिया जाता है। प्राचीन समय से ही मानव अपनी अभिव्यक्ति कला के माध्यम से ही करता आया है। कुमाऊं में प्राचीन समय से ही कई जनजातियां निवास कर रही है। विषम परिस्थितियो में जीवन यापन करने वाली इन जनजातियों की कला, संस्कृति का विशेष महत्व है। कुमाऊं में मुख्य रूप से चार प्रमुख जनजातियां निवास करती है। जिसमे सर्वप्रथम मध्य हिमालयी कुमाऊं के सीमान्त जनपद की शौका तथा राजी (वनरावत) जनजाति, यहां की तीसरी जनजाति थारू जनजाति है, यह कुमाऊं के तराई क्षेत्र में निवास करती है। तराई-भाबर में निवास करने वाली यहां की चौथी जनजाति बुक्सा है। इन सभी जनजातियों का संबंध प्राचीन काल से ही है। कुमाऊं के जनजातीय समाज में लोककला का समायोजन वर्षों से रहा है। यहां के जनजातीय समाज में कई त्योहारों, पर्वों एवं उत्सवों कों मनाये जाने का प्रचलन है। इन त्योहारों, पर्वों एवं उत्सवों में लोककला की छाप सर्वथा दिखाई देती है। वैसे तो जनजातीय समाज के अपने कुछ विशेष प्रमुख त्यौहार, पर्व तथा उत्सव हैं। जिनको मनाने का तरीका कुमाऊं के अन्य समाज से भिन्न हैं।

लेकिन होली एक ऐसा त्यौहार है, जो यहां के पहाड़ी एवं मैदानी क्षेत्रों के लोगों के साथ साथ जनजातीय समाज में भी जोश एवं उत्साह के साथ मनाया जाता है। यहां होली के अवसर पर धूनी पूजन हो या अन्य आनुष्ठानिक कार्य कला का समावेश सभी जगह व्याप्त है। चाहे वह इनके वस्त्र आभूषण में समाहित हो या फिर वाद्य यंत्रों में, इनको निर्मित करने से लेकर पूर्ण करने तक के कार्य में कला का समावेश होता है। यहां का अधिकांश जनजातीय समाज स्त्री प्रधान रहा है, इस अवसर पर भी स्त्रियों द्वारा आज के समय में लोक कला के माध्यम से रंगोली बनाए जाने का भी प्रचलन रहा है। परंपरा, विश्वास, अंधविश्वास, रूढ़ियों में विश्वास करने वाले यह लोग जादू-टोने, तंत्र आदि को जीवन के सुअवसरों में भी महत्व दिया करते हैं। इस कारण होली के अवसर पर भी कला परम्परा में भी तांत्रिक कला का प्रभाव प्रतिकों के माध्यम से दिखाई देता है। जिसका उल्लेख इस प्रकार है-

चित्र संख्या-1 होली के रंग

**शौका-** मध्य हिमालय की गोद में विषम परिस्थितियों में बसी भोटिया जनजाति। संपूर्ण भारत की सबसे विकसित जनजातियों में से एक है। इस जनजाति का इतिहास प्राचीन काल से ही रहा है। कहा जाता है प्राचीन काल में इनके द्वारा कैलाश पर्वत के आस-पास से सुहागा खोजा गया। जो धातुओं के टुकड़ों कों आपस में जोड़ने में प्रयुक्त किया जाता है। 'संस्कृत' में इस धातु को 'टंकण' कहा जाता है। इसलिए इस जाति को "तंगण" भी कहा जाता है।'1 प्राचीन काल से इनका सम्बन्ध व्यापार से रहा है। इनको यहां के विभिन्न राजवंशों द्वारा समय-समय में प्रोत्साहन मिलता रहा है।

यह जनजाती भाषा एवं शारीरिक बनानावट में तिब्बत से निकटता रखती है। भोटिया जनजाति मुख्य रूप से लगभग 2100 से 3500 मीटर की ऊचाई में दारमा, व्यास, चौदांस, जोहार घाटी में निवास करती है। इसके अल्मोड़ा, बागेश्वर आदि में भी यह जनजाति निवास करती है। कुमाऊं में भोटिया जनजाति को स्थान के आधार पर अलग अलग नाम से जाना जाता है। इन्हे मुन्श्यारी में 'शौका', धारचूला में 'रं' कहा जाता है। इस जनजाति के अधिकतर परिवार हस्तनिर्मित कार्य तथा व्यापार करते है। इनमे सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधताएं पायी जाती है। यह जनजाति सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूप से समृद्ध रही हैं। इस जनजाति में तीज त्यौहार, पर्व-

उत्सव एवं लोक त्यौहार मनाये जाने का प्रचलन प्राचीन समय से है। यह जाति अपने लोक देवताओं गब्ला, स्यांगसाइ, मुसाइ, लमसाल, घंटाकरण देवता की आराधना के अलावा हिन्दू देवी देवताओं को भी पूजते है। यह अपने ब्राह्मण को धामी, पसुवा या धनगरिया के नाम से पुकारते है। इनके प्रमुख त्यौहार लोसर, स्यांगथांग, गबला एवं कंडाली उत्सव हैं।

इनके प्रमुख हिन्दू त्योहारों में होली, दीपावली, नन्दाष्टमी एवं रक्षाबंधन आदि हैं। भोटिया लोग कुमाऊ के अन्य लोगों की तरह ही होली के त्यौहार को भी मनाते हैं। यहां हिन्दू त्योहारों कों भी उत्साह एवं प्रसन्नता के साथ एक साथ मिल-जुल कर मनाते हैं, पर इस अवसर पर होली गीतों का प्रारम्भ एवं त्यौहार की सुरुवात वेदी अंकन तत्पश्चात उसकी पूजा अर्चना के साथ होता है। कुमाऊ अपनी लोककला के लिए प्रसिद्ध है। यहां जिस प्रकार तिथि, पर्व-त्योहारों में लोककला का समायोजन रहता है। उसी प्रकार भोटिया समाज में भी त्योहारों के अवसर पर लोककला का समायोजन रहता है। यहां प्रचलित है की किसी भी त्यौहार या शुभ पर्व के अवसर पर सर्वप्रथम अपने लोक देवता को दीप जलाकर, मिठाई, पुष्प, आदि अर्पित कर उनका वंदन करके चैक स्थापित करना 'शुभ कार्य के प्रारम्भ में चैक स्थापना और स्वस्तिक चिन्ह का अंकन सर्व प्रचलित है। जो शुभ की स्थापना का प्रतीक है।'2

चित्र संख्या-2, विभिन्न अंलकरणों के माध्यम से धूनी निर्माण

यहां होली के अवसर पर अपने सामुदायिक पूजा स्थल पर एकत्रित होकर चीर बंधन करते है। 'चीर बंधन एक सामूहिक अनुष्ठान है, जो गांव के मंदिर में संपन्न किया जाता है। प्रत्येक घर से अबीर, गुलाल, चीर के धड़ो (रंगीन कपड़े के टुकड़ों) के साथ उपस्थित इसमें होती है। तथा पदम् की टहनी या बांस के डंडे में चीर बांधी जाती है' ।3 तत्पश्चात पूजा की धूनी का अलंकरण सूखे रंगों द्वारा करते है। 'युगों पहले होली का रूप यह नहीं था। वन्य व गोपालन के आदिम युग से लेकर के कृषि युग के आरम्भ काल तक, शैव, वैदिक व अन्य अनेक परम्पराओं के मिश्रण से होली का वर्तमान रूप निर्मित हुआ है।'4 यह लोग शिव की पूजा करते हैं। इसलिए होली के अवसर पर अंकित होने वाली धूनी भी शिव एवं शैव मत से सम्बंधित हो सकती है। लोसर त्योंहार में यह लोग आपस में आटे से होली खेला करते हैं।

**राजी-** कुमाऊं के सीमान्त जनपद में निवास करने वाली राजी जनजाति जिसे वनरावत भी कहा जाता है। इस जनजाति कों किरातों का वंशज भी माना जाता है। कृषि कार्य करने वाले वनरावत काष्ठ कला में निपुण माने जाते है। रूढ़िवदिता, अन्धविश्वास एवं संकोची होने के कारण यह वन्य जीवन जीते है इस कारण यह लोग आधुनिक समाज से नहीं जुड़ पाए है। 'जंगलों से जुड़ाव के कारण ये प्रकृति प्रेमी हैं और देवताओं के रूप में प्रकृति को ही पूजते हैं. वृक्ष पूजा और भूमि पूजा इनके वहाँ अत्यधिक प्रचलित है। विगत कुछ वर्षों से यह लोग हिन्दू रीति-रिवाज के अनुसार भी त्योहार मनाने लगे हैं' ।5 वनरावत कुछ हिन्दू त्योहारों को मनाते है। यह लोग होली के त्यौहार को हिन्दुओं की तरह अबीर-गुलाल में रंग कर मनाते है।

**थारू -** उत्तराखंड में थारू जनजाति कुमाऊं की तराई से लेकर पड़ोसी राज्य उत्तरप्रदेश के पीलीभीत तक फैली है। इन्हें किरातों तथा मंगोलो का वंशज माना जाता है। कुमाऊं में थारू जनजाति मुख्यतः सितारगंज के आस पास एवं खटीमा में विस्तृत है। थारू जनजाति को उत्तराखंड की अन्य जनजातियों की भांति अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्राप्ति है। 'थारू' संस्कृति प्रकृति के अनुरुप ढली हुई है। उनके आवास, भोजन, कपड़ा, धर्म, अर्थव्यवस्था और जीवन के कई अन्य भाग प्रकृति पर आधारित हैं और परिस्थितिकी संतुलन के अनुकूल हैं।'4 थारुओं के क्षेत्र को 'थरुवाट' या 'थडुवाट' कहा जाता है। जिसका अर्थ है- गहरा दलदल स्थान जिसको तराई कहा जाता है। गहरा और दलदला होने के कारण यहां भूमिगत जल की अधिकता होती है। प्रारम्भ में यहां बहुत बड़ा जंगल हुआ करता था। धीरे मानव बस्तियों के विकसित होने के कारण यहां जनसंख्या में बढ़ोत्तरी आयी जिसके फलस्वरूप यहां कई बीमारियों का भी जन्म हुआ।

चित्र संख्या-3, होली के अवसर पर नृत्य करते थारू महिला एवं पुरूष

यहां के लोग स्वयं कों महाराणा प्रताप के वंशज मानते हैं। इसलिए यहां के पुरुषों की वेशभूषा राजपूत सामंतो की तरह हुआ करती है। यहां की महिलाये भी रानियों के समान सज- धज कर पूर्ण श्रृंगार कर आभूषण पहनती हैं। इनकी आजीविका का प्रमुख साधन कृषि कार्य है। इसके अलवा ये लोग लड़की के बर्तन आदि बनाने का भी कार्य करते है। थारू समाज की संस्कृति अन्य जनजातीय समाज की संस्कृति से भिन्न तथा परिस्कृत है। यह लोग अपने मनोरंजन कई प्रकार से करते हैं। यहां त्योहारों लोक उत्सवों एवं पर्वों को भी महत्व दिया जाता है।

यह लोग हिन्दू त्योहारों को कम महत्व देते है। जबकि अपने समाज में प्रचलित लोक त्योहारों कों धूम-धाम से मनाते है। यह लोग दीपावली, दशहरा या अन्य त्योहार को नहीं मनाते हैं। जबकी 'होली' के त्यौहार को यह जनजाति कई वर्षों पूर्व से मनाती आ रही है।

यहां होलीकोत्सव की सुरुवात माघ मास की बसंत पंचमी से आरम्भ होकर होली के पंद्रह दिन बाद तक रहती है। किसी समय त्यौहार की धूम यहां लगभग महीना भर तक रहती थी। यहां होली दो प्रकार से मनाई जाती है जिंदा होली तथा मरी होली 'माघ' की पूर्णमासी से होली गाने लग जाते हैं। एवं फाल्गुन पूर्णिमा से दिन में होली गायी जाती है। हिन्दुओं की धुलैंड़ी के आठवें दिन बाद अपनी धुलैडी करते हैं' ।5 थारू महिलाये, पुरुष एवं बच्चे सामूहिक रूप से एकत्रित होकर अपनी पारम्परिक पोशाक पहन कर हाथ में रुमाल को बांधकर हवा में लहराते हुए, एक दूसरे की बाहों में हाथ डालकर मंगलगान गाते हैं। इसके साथ ही ढ़ोल, झांझर की सुरीली करतल ध्वनि दूर-दूर तक अपनी गूंज छोड़ती है।

सामूहिक रूप से एकत्रित होकर स्त्री-पुरुष आपस में एक दूसरे की बाहो में हाथ डाले एक गोल घेरे में होली गीत गाते हैं। होली का त्यौहार में सारे दुख व्याधि छोड़ आपसी मतभेद को भूलकर मस्ती में सराबोर स्त्री पुरुष होली गीतों की भावनाओं में बहकर इस त्यौहार को और अधिक रंगीन बना देते हैं। आजकल यहां होली के अवसर पर चीर बंधन के समय रंगोली बनाई जाती है।

**बुक्सा-** कुमाऊं की तराई में बसी जनजाति जिसे बुक्सा के नाम से जाना जाता है। जिस छेत्र में यह लोग बसे हुए हैं, उसे 'बोक्साड़' कहा जाता है। अन्य जातियों की तरह बुक्साओं में भी मातृसत्ता कों महत्व दिया जाता है। इसलिए यहां समाज में स्त्री पुरुष दोनों को बराबर महत्व मिलता है। यह लोग अपने नाम के साथ 'राणा' या 'सिंह' उपनाम प्रयोग करते हैं। इनके पारम्परिक लोक त्यौहारों में डलइया, गोटेर, डोंगड़ आदि है। तथा प्रमुख हिन्दू त्योहारों में होली, दीपावली आदि है। होली के त्यौहार के समय ये लोग सर्वप्रथम अपने लोकदेवता 'भूमिया' के मंदिर में जाकर उनकी मूर्ति पूजा करते है। इसके बाद वह बुक्सा समाज की तरह होली गान गाते हैं।

निष्कर्ष- इस प्रकार कुमाऊं के जनजातीय समाज में होली के त्यौहार को प्रमुखता के साथ मनाया जाता है। यहां इस त्यौहार में कुछ भिन्नताए इसे और अधिक व्यापक बनाने में योगदान देती है। होली का ऐसा रूप कही और नहीं है। होली के समय यहां नृत्य एवं गायन के साथ कही ना कही कला को भी समाहित किया है चाहे वह सांस्कृतिक रूप में हो या लोक अभिव्यक्ति के रूप में हो कला सर्वत्र है सभी रूपो में व्याप्त है।

**सन्दर्भ-**

1. रावत, जय सिंह, (2013), उत्तराखंड जनजातियों का इतिहास, बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी देहरादून, पृष्ठ संख्या- 43
2. जोशी, शेखर चन्द्र, (2009), चित्रकला एवं लोक कला विभिद आयाम, प्रकाश बुक डीपो बरेली, पृष्ठ संख्या- 70

1. उप्रेती, पंकज, (2009), कुमाऊं का होली गायनः लोक एवं शास्त्र, शक्ति प्रेस हल्द्वानी, पृष्ठ संख्या- 15
3. रायपा रतन सिंह, (2015), शौका सीमावर्ती जनजाति (सामाजिक, सांस्कृतिक अध्ययन), अंकित प्रकाशन हल्द्वानी, पृष्ठ संख्या - 142
4. https://kafaltree.com/raji-tribe-of-uttarakhand-traditions-and-living/
5. रावत, जय सिंह, (2013), उत्तराखंड रूजनजातियों का इतिहास, बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी देहरादून, पृष्ठ संख्या - 139
6. पाण्डेय, बद्रीदत्त, (2011), कुमाऊं का इतिहास, अल्मोड़ा बुक डीपो, पृष्ठ संख्या - 552